

कंद प्रदीप

भाषा में

श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिमोत्तरदेशाधिकारी श्रीयुक्त
नवाब लॉर्डनेट गवर्नर बहादुर की
आज्ञानुसार

पण्डित कन्हैयालाल प्रथम कक्षाध्यापक

मुदरिस दस्तूर उलतालीम

जिला स्कूल मेरठ ने

बनाया

157

इलाहाबाद

गवर्नमेंट के छापेखाने में छापा गया

सन १८८४ ई०

2nd Edition, 2,000 copies,
Price, per copy, 2 as. 6 pies.

{ दूसरी बार २,००० पुस्तक
मोल फ्री पुस्तक =) ६ पाई

भूमिका

बहुधा पाठशालाओं में पुस्तक गुटका पढ़ाई जाती है और उसके अनेक स्थानों में छंद आते हैं बल्कि छंदोवद्ध काव्य ही जुदा लिखा है ॥ परंतु ऐसी कोई प्रथक छंद की पुस्तक नहीं है जिससे प्रस्तार पूर्वक लड़कों को छंदों का ज्ञान हो ॥

इस कारण मुझ कन्हैयालाल प्रथम कक्षाध्यापक मदरसह दस्तूर अलतालीम मेरठ ने पंडित पिंडीशंकर रयाजी के अध्यापक की सहायता से इस ग्रंथ को बना कर इसका नाम छन्दः प्रदीप रक्खा ॥

छंदप्रदीप

१ पाठ

कीरति धन व्यवहार जग अरु मल डारे धोइ ।
होति कबित तैं चतुरई जगत राम वश होइ ॥

ये अनेक फल काव्य के पढ़ने से होते हैं इस हेतु से काव्य का पढ़ना आवश्यक है ॥

परंतु उसका सम्यक ज्ञान छंद के जानने के आधीन है इस कारण लड़कों के ज्ञान के अर्थ छंदों के लक्षण लिखे जाते हैं ॥

२ पाठ

बात दो प्रकार की होती है एक तो बचनिका में दूसरी छंद में इस हेतु से छंद का लक्षण नीचे लिखते हैं ॥

लक्षण

लघु गुरु के नियमपूर्वक नियमित जो वाक्यों का समूह है उसको छन्द कहते हैं वह दो प्रकार का है एक गद्य दूसरा पद्य जहां माचा और अक्षरों का नियम न हो उसको गद्य और जहां माचा और अक्षर नियम पूर्वक हों उसको पद्य कहते हैं ये दोनों काव्य कहे जाते हैं क्योंकि कवि के बनाये हुए अलंकार आदि सहित और दोष रहित जो शब्द और अर्थ हैं उन्हीं का नाम ग्रंथकारों ने काव्य लिखा है इस कारण जो पिंगलादिक आचार्यों ने लौकिक छंद कहे हैं अर्थात् जिनका व्यवहार अब है उनका वर्णन किया जाता है ॥

पद्य का वर्णन

पद्य के दो प्रकार हैं एक तो जहां वर्ण अर्थात् अक्षरों ही की गिनती हो उसको वर्णवृत्त कहते हैं और जहां माचा का नियम हो उसको माचावृत्त कहते हैं ॥

इन दोनों के उदाहरण

वर्ण छंद भुजङ्गप्रयात

तवे देवकी देवकी जाति धारे रहै कंस की कैद में चित्त मारे ।
बढ्यो सोच लागे सबै बात फीकी बखानी पड़े क्यो दशा देखि जीकी ॥

माचा छंद दोहा

तीन वर्ण को नियम कर कहिये छंद सुजान ।

सो चिव्यंजन चिच है कहत सुकवि परधान ॥

छंदों के उपयोगी गुरु अरु लघु हैं ॥

इस कारण गुरु अरु लघु के लक्षण लिखे जाते हैं ॥

टेढ़ी रेखा से गुरु जानें और सूधी रेखा से लघु की पहचान है ॥

जैसे ५ ।

और भी गुरु और लघु का विशेष विचार लिखते हैं ॥

अनुस्वार जिसके सिर पर हो और विसर्ग जिसके आगे हो और संयोग की जो आदि का है ऐसा लघु गुरु ही लिखा जाता है और श्लोक के चरण के अंत का लघु विकल्प करके लघु समझना चाहिये और पाद की आदि में जो संयोग हो तो उस संयोग को पहिला गुरु भी लघु ही समझना चाहिये और जो कवि लोग गुरु को भी लघु कर पढ़ते हैं उसको भी लघु जानें और संयोगी की आदि की लघुमाचा को गुरु कहते हैं परंतु कभी लघु पढ़ी जाती है जैसे “धन से होत प्रधान” इस चरण में प्र के आदि की माचा लघु पढ़ी जाती है ॥

गण विचार

छंद में गण दो प्रकार के हैं एक माचा रूप दूसरे वर्ण रूप है ॥

माचा के गण

ट ठ ड ढ ण ये पांच गण माचा के छंद जानने वालों ने कहे हैं

गणों का प्रमाण

१	ट	छः माचा का	५ ५ ५
२	ठ	पांच माचा का	५ ५ ।
३	ड	चार माचा का	५ ५
४	ढ	तीन माचा का	५ ।
५	ण	दो माचा का	५

वर्ण के आठ गण हैं उनका प्रमाण देवता फल सहित नीचे लिखे चक्र से विदित होगा ॥

गण का रूप	गण का नाम	गण का देवता	गण का फल
५ ५ ५	मगण	भूमि	मंगल सुख
१ ५ ५	यगण	जल	वृद्धि
५ १ ५	रगण	अग्नि	अंगदाह हानि
१ ५ ५	सगण	पवन काल	उच्चाटन मोच
५ ५ १	नगण	आकाश	फल शून्य
१ ५ १	जगण	भानु	रोग
५ १ १	भगण	चन्द्र	कीर्ति
१ १ १	नगण	नाग	बुद्धि सुख

षट् प्रत्ययों का वर्णन

छंदों के ज्ञान के अर्थ छः प्रत्यय अर्थात् उन भेदों की रीतें उनका जानना अवश्य है अन्यथा छंदों के शुद्धाशुद्ध का ज्ञान होना कठिन है ॥

नाम प्रत्ययों का

प्रस्तार १ उट्टिष्ट २ नष्ट ३ मेरु ४ मर्कटो ५ पताका ६ ॥

उट्टिष्ट आदि प्रत्ययों का जानना प्रस्तार के आधीन है इस कारण प्रथम प्रस्तार का वर्णन किया जाता है ये छहों प्रत्यय मात्रा और वर्ण के जुड़े २ हैं परंतु प्रथम मात्रा के फिर वर्ण के इस ग्रंथ में लिखे हैं ॥

मात्रा का प्रस्तार

प्रस्तार का अर्थ फैलाव है अर्थात् विस्तार छंदों का ॥ मात्रा के प्रस्तार में प्रथम गुरु के नीचे लघु की मात्रा लिखे फिर ऊपर जैसी लिखी हो वैसी ही नीचे लिख दे जो मात्रा बचें उनको गुरु और लघु के रूप से बाईं ओर लिख दे तो मात्रा का प्रस्तार हो जाता है और जब अंत में संपूर्ण लघु आजाय तब यह जान ले कि यहां प्रस्तार की विधि पूरी हुई ॥

वर्ण का प्रस्तार

प्रथम गुरु के नीचे लघु लिख दे फिर ऊपर की जैसी रेखा हो वैसा ही नीचे लिखे और जो बचे उसके स्थान में गुरु ही बनाकर पंक्ति को

पूर्ण कर दे यह वर्ण के प्रस्तार की विधि है जब संपूर्ण लघु आजावें तब प्रस्तार की विधि पूरी जाने ॥

माचा प्रस्तार का उदाहरण

६ माचा	५ माचा	४ माचा	३ माचा	२ माचा
टगण	ठगण	डगण	ढगण	णगण
५ ५ ५ १	१ ५ ५ १	५ ५ १	१ ५ १	५ १
१ १ ५ ५ २	५ १ ५ २	१ १ ५ २	५ १ २	१ १ २
१ ५ १ ५ ३	१ १ १ ५ ३	१ ५ १ ३	१ १ १ ३	
५ १ १ ५ ४	५ ५ १ ४	५ १ १ ४		
१ १ १ ५ ५	१ १ ५ १ ५	१ १ १ १ ५		
१ ५ ५ १ ६	१ ५ १ १ ६			
५ १ ५ १ ७	५ १ १ १ ७			
१ १ १ ५ ८	१ १ १ १ ८			
५ ५ १ १ ९				
१ १ ५ १ १ १०				
१ ५ १ १ १ ११				
५ १ १ १ १ १२				
१ १ १ १ १ १ १३				

वर्ण प्रस्तार

छः वर्ण का प्रस्तार

५ ५ ५ ५ ५ ५ १	५ ५ ५ १ ५ ५ ९
१ ५ ५ ५ ५ ५ २	१ ५ ५ १ ५ ५ १०
५ १ ५ ५ ५ ५ ३	५ १ ५ १ ५ ५ ११
१ १ ५ ५ ५ ५ ४	१ १ ५ १ ५ ५ १२
५ ५ १ ५ ५ ५ ५	५ ५ १ १ ५ ५ १३
१ ५ १ ५ ५ ५ ६	१ ५ १ १ ५ ५ १४
५ १ १ ५ ५ ५ ७	५ १ १ १ ५ ५ १५
१ १ १ ५ ५ ५ ८	१ १ १ १ ५ ५ १६

५ ५ ५ ५ १ ५	१७
१ ५ ५ ५ १ ५	१८
५ १ ५ ५ १ ५	१९
१ १ ५ ५ १ ५	२०
५ ५ १ ५ १ ५	२१
१ ५ १ ५ १ ५	२२
५ १ १ ५ १ ५	२३
१ १ ५ १ ५	२४
५ ५ ५ १ १ ५	२५
१ ५ ५ १ १ ५	२६
५ १ ५ १ १ ५	२७
१ १ ५ १ १ ५	२८
५ ५ १ १ १ ५	२९
१ ५ १ १ १ ५	३०
५ १ १ १ १ ५	३१
१ १ १ १ ५	३२
५ ५ ५ ५ ५ १	३३
१ ५ ५ ५ ५ १	३४
५ १ ५ ५ ५ १	३५
१ १ ५ ५ ५ १	३६
५ ५ १ ५ ५ १	३७
१ ५ १ ५ ५ १	३८
५ १ १ ५ ५ १	३९
१ १ १ ५ ५ १	४०

५ ५ ५ १ ५ १	४१
१ ५ ५ १ ५ १	४२
५ १ ५ १ ५ १	४३
१ १ ५ १ ५ १	४४
५ ५ १ १ ५ १	४५
१ ५ १ १ ५ १	४६
५ १ १ १ ५ १	४७
१ १ १ १ ५ १	४८
५ ५ ५ ५ १ १	४९
१ ५ ५ ५ १ १	५०
५ १ ५ ५ १ १	५१
१ १ ५ ५ १ १	५२
५ ५ १ ५ १ १	५३
१ ५ १ ५ १ १	५४
५ १ १ ५ १ १	५५
१ १ १ ५ १ १	५६
५ ५ ५ १ १ १	५७
१ ५ ५ १ १ १	५८
५ १ ५ १ १ १	५९
१ १ ५ १ १ १	६०
५ ५ १ १ १ १	६१
१ ५ १ १ १ १	६२
५ १ १ १ १ १	६३
१ १ १ १ १ १	६४

उट्टिष्ठ का लक्षण

माचा का जो हम प्रस्तार वर्णन कर आये हैं उस में कोई यह प्रश्न करे कि ५ १ ५ १ यह छः माचा के प्रस्तार का कौनसा भेद है ॥

तो यह स्वरूप कहा हुआ है इस कारण इसका नाम उट्टिष्ठ है अब इस भेद के बतलाने का प्रकार लिखते हैं जै माचा हैं उनके समान

प्रथम एक अंक धरे फिर एक और एक दो हुए दो धरे फिर दो और एक तीन हुए तीन धरे फिर तीन और दो पांच हुए पांच धरे फिर पांच और तीन आठ हुए आठ धरे फिर आठ और पांच तेरह हुए यह योग छः स्थान तक हुआ ऐसे ही जै माचा के स्थान हों वहां तक दो २ अंक जोड़ कर रखता जाय परंतु जो रूप पूछा हो वहां लघु के तो सिर पर ही धरे और गुरु के ऊपर और नीचे अंक धरे फिर गुरु के सिर के अंक अंत अंक में से घटावे जो शेष रहे वही संख्या पूछे हुए रूप की होगी और अंत में जो अंक है वही प्रस्तार के रूपों की संख्या का प्रमाण होगा ॥

जैसे ५। ५। यह छः माचा के प्रस्तार का कौनसा रूप है तब यहां पूर्वोक्त रीति करे यहां गुरु के सिर के अंक १ और ५ है इनका योग अंत अंक १३ में से घटाया तो ७ बचे यही उत्तर हुआ अर्थात् पूछा हुआ रूप छः माचा का सातवां भेद है और छः माचा के १३ भेद होंगे ॥

वर्णोद्धृष्ट की रीति

कोई पूछे कि छः वर्णों के प्रस्तार में १ ५ ५। १ ५ यह कौनसा रूप है तब उद्धृष्ट की इस रीति को कर के बतलादे ॥ रीति ॥ पूछे रूप धर प्रथम एक का अंक स्थापन करे फिर दूसरा कर्क स्थापन करता जाय जहां तक वर्णों की संख्या का अंत हो फिर लघु के सिर के जो अंक है उनको जोड़ कर एक और जोड़ दे जो संख्या हो वही भेद की संख्या होगी जैसे

यहां लघु के सिर अंक ये हैं १ एक ८ चौर १६ इनको जोड़ा तो सब २५ हुए इन में एक और मिलाया तो हुए २६ यही उत्तर है अर्थात् छब्बी-

सवां छः वर्णों का भेद है या गुरु के सिर के अंक जोड़ कर अंत के अंक को दूसरा कर उस में से घटा दे जो शेष रहे वही उत्तर होगा जैसे पूर्वोक्त

उदाहरण गुरु के सिर के अंक जोड़े २ और ४ और ३२ इनको जोड़ा तो ३८ हुए और अंत अंक को दूसरा किया तो ६४ हुए अब ६४ में से ३८ घटाया

तो २६ बचे यही उत्तर है ॥

नष्ट की रीति

प्रथम माचा का नष्ट

जब कोई पूछे कि छः माचा के प्रस्तार में सातवां रूप कैसा होगा अर्थात् उसका स्वरूप न लिखे तब नष्ट की रीति करके बतला दो ॥

जै माचा का प्रस्तार हो उतनी संख्या के प्रमाण लघु लिखे और उनके सिर पर उट्टिष्ट की रीति के अनुसार अंक बनावे फिर अंत अंक में से पूछी हुई अंक की संख्या घटा दे जो शेष बचे उसकी रीति यह है ॥

कि अंत के अंक को छोड़ कर पूर्व के जिस अंक में वह पूर्वोक्त शेष अंक घट जाय कहीं न घट सके वहां दो या तीन या चार या पांच अंकों को जोड़ कर उस शेष अंक को घटाना चाहिये जिन २ अंकों के मिलने से वह अंक पूरा हो उस २ स्थान में जिस अंक में मिल कर उस शेष अंक के समान हो उस लघु की और उसके पास की दो लघु की माचा के स्थान में एक गुरु लिख दे ऐसे ही करता जाय तो उत्तर निकल आवेगा ॥

जैसे छः माचा के छः लघु लिखे फिर पूर्वोक्त उट्टिष्ट के अंक धर दे और अंत के अंक १३ में पूछा अंक ७ घटा दिये शेष ६ रहे यह अंक पांच और एक में मिल कर पूरे होते हैं तो एक और दो के नीचे के दोनों लघु की जगह एक गुरु बनावे और पांच के नीचे और आठ के नीचे के लघु के स्थान में एक गुरु बनावे तो उत्तर निकल आवेगा ॥

नष्ट का रूप

१	२	३	४	८	१३

तो यह उत्तर हुआ ५।५।

वर्ण का नष्ट

किसी ने पूछा कि छः वर्ण के प्रस्तार में छब्बीसवां रूप कैसा होता है ॥

वहां यह क्रिया करे पहिले छः वर्ण के स्थान में छः लघु लिख दे जैसे

इस चक्र में लिखे हैं ॥

१	२	४	८	१६	३२
—	—	—			—
१	५	५			५

इनके ऊपर उट्टिष्ट की रीति के अनुसार अंक लिख लिये अंत का जो अंक ३२ है उसको दूना किया तो चौंसठ हुए इन चौंसठ में

पूछा हुआ छब्बीस का अंक घटा दिया तब बचे अड़तीस यह अंक लघु के सिर के अंक दो और चार और बत्तीस मिल कर के अड़तीस के समान होते हैं इस कारण दो और चार और बत्तीस के स्थान में गुरु लिख दो तो उत्तर होगा ।

जैसे उत्तर । ५ ५ ।। ५

नष्ट की दूसरी रीति

किसी ने छः वर्ण के प्रस्तार में दसवां रूप पूछा तो दस का अंक सम है तो लघु लिख दिया फिर दस को आधा किया तो पांच बिषम है तो एक गुरु लिखा फिर पांच में एक मिला कर आधा किया तो तीन हुए यह भी बिषम है फिर गुरु लिखा फिर तीन में एक ऊपर से जोड़ा तो चार हुए यह सम है आधा किया तो दो हुए यह सम है तो लघु लिखा फिर दो का आधा एक यह बिषम है तो गुरु लिखा ऐसे एक तक क्रिया करे परंतु इस क्रिया करने से वर्ण पांच ही आये हैं यहां यह रीति है कि जै बाकी रहें उतने गुरु लिख दे तो ऐसा रूप हुआ । ५ ५ । ५ ५ यही दसवां रूप है और जो एक न पहुंचे बीच ही में वर्ण पूरे हो जायें तो यह आधे करने की रीति को छाड़ दे ॥

माचा मेरु का वर्णन

कोई पूछे कि छः माचा के प्रस्तार में कितने २ गुरु के और कितने २ लघु के कितने भेद हैं तो माचा का मेरु बनाय के भेद बता दे ॥

मेरु के बनाने की रीति

पहिले एक कोष्ठ लिखे फिर दो २ जितनी माचा हों उतने ही कोष्ठ बनावे ऊपर के कोष्ठ से अंत के कोठों में एक २ लिख दे और आदि कोठे जो खाली हैं उन में पहिले एक फिर दो फिर एक फिर तीन फिर एक और चार फिर एक और पांच इस रीति कोष्ठों के अंत्य तक लिखे और बीच २ के कोठे खाली रहे उनके भरने का यह प्रकार है कि जो कोठा खाली हो उसके सिर के अंक में उसके सिर के अंक से आगे का जो अंक है उसको जोड़ दे फिर खाली कोठा में लिखे तब सब से नीचे की जो पंक्ति बनेगी उस से कितने गुरु और कितने लघु हैं यह उत्तर निकल आवेगा ॥

अब जै माचा का मेरु हो वह पहिला अंक है और आगे २ के जो अंक हैं उनमें एक २ गुरु घटाकर दो २ लघु बढ़ाता जाय ऐसे करके जो संख्या अंकों की है उतने ही भेद होंगे और अंत की पंक्ति के अंक जोड़ कर संपूर्ण संख्या निकल आवेगी ॥

उदाहरण छः माचा के मेरु का रूप

१			
१	२		
२	१		
१	३	१	
३	४	१	
१	६	५	१

यहां छः माचा के प्रस्तार में तीन गुरु का १ भेद दो गुरु और दो लघु के ६ भेद एक गुरु और चार लघु के पांच हैं सर्व लघु का एक भेद है फिर एक और छः सात और पांच बारह और एक तेरह इस क्रम से छः माचा के तेरह भेद हुए ॥

वर्ण मेरु की रीति

कोई पूछे कि छः वर्ण के प्रस्तार में कै २ गुरु और लघु के भेद है तो वर्ण मेरु लिख कर भेद बतला दे ॥

पहिले दो कोठे लिखे फिर एक २ वृद्धि कर जै वर्ण हों उतने कोठे बनावे अब आदि और अंत के कोठों में एक का अंक लिखे और शून्य कोठों में शिर के अंक दो दो अंक जोड़ कर ग्रहन मुक्त की रीति के अनुसार लिख दे और जै वर्ण का मेरु बनाना हो उतनी ही पंक्ति बनावे अब जै वर्ण का मेरु हो उतने ही गुरु का भेद पहिले अंक से कहदे और आगे के कोठों से एक २ गुरु घटा कर और एक लघु बढ़ा कर भेद बतला दे और संपूर्ण भेदों की संख्या नीचे की पंक्ति के अंक गिनने से निकल आती है ॥

उदाहरण

यहां प्रथम गुरु का एक भेद है आगे एक २ गुरु घटाता जाय एक २ लघु बढ़ाता जाय दूसरे कोठे में पांच गुरु और एक लघु का भेद फिर

तीसरे कोठे में चार लघु और दो लघु के १५ भेद इसी क्रम से सब भेद कहने चाहियें सब भेद ६४ हैं यह संख्या आठ कोठे गिनने से निकल आती है ॥

जैसे

१
६
१५
२०
१५
६

१

६४

१	१	१					
१	२	१	२				
१	३	३	१	३			
१	४	६	४	१	४		
१	५	१०	१०	५	१	५	
१	६	१५	२०	१५	६	१	६

माचा पताका का वर्णन

कोई पूछे कि मेरु प्रमाण से जो तुमने भेद बतलाए हैं वे भेद किस र स्थान के हैं तो पताका के अनुसार बतलादो ॥

पताका के बनाने की

रीति

पहिले दण्ड के आकार बनावे फिर उस दण्ड में जितनी माचा हों उतने खड़े कोष्ठ बनावे अब उन कोठों के भरने का प्रकार कहा जाता है नीचे से पताका के दण्ड में उट्टिष्ट के अंक भर दे फिर अंत के अंक में नीचे से एक २ अंक घटाता जाय जो अंक बचे उन अंकों को दण्ड के दक्षिण तरफ लिखे फिर दो २ तीन २ चार २ पांच २ अंकों को घटाता जाय इस रीति से जहां तक संभव हो करै अन्त अंक की पंक्ति से तीसरी २ पंक्ति में उन अंकों को लिखे तो पताका बन जायगी और जो अंक पहिली पंक्ति में लिख लिये हों उनको फिर न लिखे इस रीति से पताका के स्थान बता देगा ॥

उदाहरण

१३	
८	
५	५ ८ १० ११ १२
३	
२	२ ३ ४ ६ ७ ८
१	

यहां एक गुरु के पांच भेद हैं उन में एक पांचवां दूसरा आठवां तीसरा दसवां चौथा ग्यारहवां पांचवां बारहवां इस प्रकार पांचों भेदों के स्थान मालूम हो गये दो गुरु के भेद हैं उनके स्थान ये हैं एक दूसरा एक तीसरा एक चौथा एक छठा एक सातवां एक नवां इस रीति से छः स्थान मालूम हुए ॥

वर्ण पताका का वर्णन

कोई पूछे कि एक और दो गुरु के जो भेद हैं मेरु के अनुसार वे किस २ स्थान के हैं ॥

पताका की रीति

पहिले पताका के दण्ड को लिखे फिर जितने वर्ण हों उतने ही कोठा खड़े बनावे एक अधिक करे उनको इस रीति से भरे कि जो उट्टिष्ठ के अंक हों उनको नीचे से ऊपर तक लिख दे फिर अंत के अंक में एक २ अंक घटा कर जो अंक बचे सो अंत अंक की नीचे की पंक्ति में लिखे फिर दो २ अंक लघु कर दूसरी पंक्ति में लिखे फिर इसी क्रम से तीन ३ चार २ पांच २ अंक घटा कर यथा क्रम पंक्ति पूरी कर के इतनी बात याद रखे कि जो अंक आजावे उसको फिर न रखे एक गुरु की पहिली पंक्ति दो गुरु की दूसरी पंक्ति इसी क्रम से सब पंक्ति जानो ॥

उदाहरण

६४											
३२	४८	५६	६०	६२	६३						
१६	२४	२८	३०	३१	४०	४४	४६	४७	५२	५४	५५
	५८	५६	६१								
८	१२	१४	१५	२०	२२	२३	२६	२७	२८		
	३१	३२	३५	४२	४३	४४	४५	५१	५३	५७	
४	६	७	१०	११	१३	१८	१९	२१	२५	३४	
	३५	३७	४१	४६							
२	३	५	६	१७	३३						
१											

यहां पहिली पंक्ति एक गुरु की है उस से मालूम होता है कि एक गुरु के छः भेद हैं ३२ का ४८ का ५६ का ६० का ६२ का ६३ का ये स्थान भेदों के हैं इसी प्रकार सब पंक्तियों से कह दे ॥

माचा मर्कुटी का वर्णन

जो कोई पूछे कि आठ माचा के प्रस्तार में सब कला कितनी हैं और सब गुरु और सब लघु कितने हैं और संपूर्ण वर्ण कितने हैं तो मर्कुटी का चक्र लिख कर बतला दे ॥

मर्कुटी बनाने की रीति

खड़ी पंक्ति सात कोठों की बनावे और लंबी पंक्ति उतने कोठों की बनावे जितनी इष्ट माचा हों ॥

इन पंक्तियों के भरने का प्रकार

लंबी पंक्तियों में पहिली पंक्ति में एक को आदि देके अंक लिखे और दूसरी पंक्ति में उद्दिष्ट के अंक लिखे और तीसरी में पहिली और दूसरी पंक्ति के गुणा करने से जो अंक हो सो लिखे और चौथी में पहिले स्थान में शून्य

लिखे फिर एक लिखे फिर दूना करता जाय उस दूने अंक को ऊपर की पंक्ति के अंक में से घटा कर जो शेष अंक रहै वह चौथी पंक्ति में लिख दे इसी रीति से चौथी पंक्ति को पूरा करे फिर बिन्दु को छोड़ कर चौथी के जो अंक हैं वे पांचवीं में भर दे और एक कोष्ठ जो अंत का खाली रहे उसको जैसे चौथी भरी है उसी क्रम से भर दे और चौथी और पांचवीं को जोड़ कर छठी पंक्ति को भरे फिर छठी और सातवीं को जोड़ कर फिर उसको आधा कर सातवीं पंक्ति को भरे ॥

मर्कुटी चक्र अष्ट माचा का

१	२	३	४	५	६	७	८	कला
१	२	३	५	८	१३	२१	३४	लघु गुरु जिसके अंत हैं
१	४	६	२०	४०	७८	१४७	२७२	सर्व कला
०	१	२	५	१०	२०	३८	७१	गुरु
१	२	५	१०	२०	३८	७१	१३०	लघु
१	३	७	१५	३०	५८	१०६	२०१	वर्ण
०	२	४	१०	२०	३६	७३	१३६	छंद संख्या

पहिली पंक्ति के अंत से कला का प्रमाण और दूसरी पंक्ति के अंत से संख्या उसके पहिले से लघ्वंत उससे पहिले अंक से गुर्वंत तक की संख्या और तीसरी चौथी पांचवीं छठी सातवीं पंक्ति से प्रत्येक क्रम से बतावे सब कला १ गुरु २ लघु ३ वर्ण ४ पिंड ५ ॥

वर्ण की मर्कुटी का वर्णन

कोई पूछे कि छः वर्ण के प्रस्तार में आदि और अंत वाले गुरु और लघु के कितने भेद हैं और सब वर्ण और गुरु लघु की माचा का प्रमाण और पिंड तो मर्कुटी को लिख कर एक साथ सब बातें बतला दे ॥

मर्कुटी के बनाने की रीति

पूर्व रीति के अनुसार सात कोष्ठ खड़े बनावे और जितने वर्ण की संख्या हो उतने लंबे कोष्ठ बनावे और फिर पहिली पंक्ति को आदि दे अंक लिखे फिर दूसरी पंक्ति के अंकों को आधा कर तीसरी पंक्ति लिखे और फिर पंक्ति के अंकों को आधा कर तीसरी में लिख दे फिर पहिली और पंक्ति

के अंकों के गुणन फल को चौथी पंक्ति के अंकों को आधा कर पांचवीं में लिखे और चौथी और पंक्ति के अंकों को आधा कर पांचवीं में लिखे फिर छठी में चौथी पांचवीं को जोड़ कर लिखे फिर छठी के अंकों को आधा कर सातवीं में लिख दे ॥

पहिली पंक्ति के अन्त के अंकों से वर्ण की संख्या कहनी चाहिये और प्रस्तार के भेदों की संख्या व दूसरी अंत अंक से कहो — और तीसरी से चार बातें मालूम होती हैं ॥

आदि गुरु के अंत गुरु के आदि लघु के भेद चौथी से सर्व संख्या प्रस्तार के वर्णों की और पांचवीं से गुरु लघु की संख्या और पूर्ण गुरु लघु की मात्रा छठी से और सातवीं से पिंड की संख्या कहनी चाहिये ॥

सात मात्रा की मर्कट्टी का वर्णन

१	२	३	४	५	६
२	४	८	१६	३२	६४
१	२	४	८	१६	३२
२	८	२४	६४	१६०	३८४
१	४	१२	३२	८०	१६२
३	१२	३६	८६	२४०	४७६
१॥	६	१८	४८	१२०	२८८

इस प्रकार छः प्रत्ययोंका वर्णन सुनकर लड़कों को प्रस्तार का ज्ञान विधि पूर्वक हो जायगा अब छंदों का विधान कहा जाता है ॥

अब अकारादि क्रम से हकार पर्यंत मात्रा छंदों के नाम लिखे जाते हैं ॥

अरिल्ल छंद

जिसके चार चरणों में सोलह मात्रा हों आदि में यमक हो और अन्त में दो लघु हों ऐसा चौंसठ मात्रा का अरिल्ल छंद होता है ॥

उदाहरण

रामचरित शुभ सुजस सुधारण तेज पुंज जग तिमिर विदारन
अवण सुनत लखबल दुखटारन भक्त हृदय आनन्द बिहारन ॥

२ अमृतध्वनि छंद

जिसके पहिले दोहा हो फिर चौबीस २ माचा के चारों चरण हों और आठ २ माचा पर प्रति चरण विश्राम हो और द्वित्व अक्षर हो और यमक हो ऐसा एक दोहा और ६६ माचा का अमृतध्वनि छंद होता है ॥

उदाहरण

अरिदल राम महाबली करगहि भार समथ्य ।
मुनिन थापि दिग विजय किय यश पायो नृप मथ्य ॥
मत्थन नतकरि लज्जित दिगज सुसज्जिय भ्रम गति ।
थकित थिर नहि रहत उड़गण शंकित निज मति ॥
उत्थिय समुद बट्टिय लहरि थर थर कंपिय लंकपति ।
दुदिय धनुष रघुवंश मणि रहितदत्यकिजिय सुअरि ॥

३ छंद उल्लाला

जिसके पहिले और तीसरे चरण में १४ माचा हों और दूसरे और चौथे में १३ ऐसा ५६ माचा का उल्लाला छंद होता है ॥

उदाहरण

५ । ५ । । । ५ । ५

राम नाम हि मुख से कहो मन में अट्टा राखि के ।
इमि जपि नाम भगवान को मन बाँछित फल को लहो ॥

४ उगाहा छंद

जिसके पहिले और तीसरे चरण में बारह २ माचा हों और दूसरे और चौथे में अठारह उसको उगाहा छंद कहते हैं ॥

उदाहरण

दहत दुष्ट जन नगरनि तेजपुंज राम नृपति तुअ देख्यो ।
उत्थित उद्धत धूमनि अंबर याते सुनील अब रेख्यो ॥

५ काव्य छंद

जिसके चारों चरणों में चौबीस २ माचा हों और छः आठ और दस माचा पर विश्राम हो ऐसा ६६ माचा का काव्य छंद होता है यह पैंतालीस प्रकार का है ॥

उदाहरण

लखि दब्बत सब नृपति करत सन्मान पाय परि ।
 थर २ उठति पलंक लंक आतंक शंक्र करि ॥
 सक सकात है समुद डरत बंधन मय मन धरि ।
 राकस अति भय खाय भगतरा इतिक कान परि ॥

६ कुण्डलिया छंद

जिसके आदि में दोहा और अंत में भी दोहा हो और दोनों दोहाओं के बीच में ग्यारह और तेरह माचा के चार चरण हों और यमक हो उसको कुण्डलिया छंद कहते हैं ॥

उदाहरण

कारण जग में राम है बिना राम बल हीन ।
 जैसे जंचे शैल पर तरु फर लगे नवीन ॥
 तरु फर लगे नवीन सुधा सम देवन नाखत ।
 पंगु महा बल हीन राम बल सौ फल चाखत ॥
 सिंह बली समरत्थ हत्थिवर मत्थ बिदारन ।
 तरु तर बैठत झंखि राम बिन ऐसे कारन ॥

७ गाथा छंद

पहिले और तीसरे चरण में बारह २ माचा हों और दूसरे चौथे में अठारह और पन्द्रह माचा होती हैं उसको गाथा छंद कहते हैं ॥

उदाहरण

राम नाम मुख भाखो और न करु चित राखो ।
 यों अनुपम रस चाखो तब प्रिय भक्त पद अभिलाखो ॥

८ गाहा छंद

पहिले और तीसरे चरण में बारह २ माचा हों और दूसरे और चौथे में बारह और पन्द्रह माचा हों उसको गाहा छंद कहते हैं ॥

उदाहरण

राम नाम दुख टारन बेद के मध्य कह्यो देखिलेहु ।
 और न करो उपाई यह ही बात मन पेखि लेहु ॥

६ गाहा छंद २

जिसके पहले और तीसरे चरण में बारह २ और दूसरे और चौथे में पन्द्रह २ माचा हों उसे भी गाहा छंद कहते हैं ॥

उदाहरण

रघुवर चरण सरो रुह अपने मन मांहि धारिलेह ।
फिर न पाइहो अवसर यह बात तुम पहचानलेह ॥

१० बिगाहा छंद

जिसके पहले चरणों में सत्ताईस और पिछले चरणों में तीस माचा हों उसको बिगाहा छंद कहते हैं ॥

उदाहरण

तेरे भुज के बल से मारे खल थपी वेद रीति ।
मुनिजन कीन्हें प्रमुदित हरि लीनी सकल जनचित्त भीति ॥

११ उगाहा छंद

जहां पहिले चरणों में तीस माचा हों और तीसरे और चौथे में भी तीस हों उसको उगाहा छंद कहते हैं

उदाहरण

रामचन्द्र तुम कीरति मनुज कहै कहे को भांतिन सों ।
देव न पावत पारहि जे उच्च है प्रभाव यातिनसों ॥

१२ गाहिनी छंद

जिसके पहिले और तीसरे चरण में बारह २ माचा हों और दूसरे में अठारह चौथे में बीस हों उसको गाहिनी छंद कहते हैं ॥

उदाहरण

लेत नाम रघुवर को भगि के पातक पुंज गये हैं बिलारि ।
थर थर कांपत खलगन शंकित देव मनहु रहैं लजारि ॥

१३ स्कन्धक छंद

जिसके पहिले चरणों में बत्तीस और तीसरे चौथे में भी बत्तीस ही हों उसको स्कन्धक छंद कहते हैं ॥

उदाहरण

ते करि वर कवि जनको दीने रघुवर विपुल तन कारे ।
जिन हाथिन की भूलन भलकत मुक्तावली लुलितसिततारे ॥

१४ चौपैया छंद

जिसके चारों चरणों में तीस २ माचा हैं और दस आठ बारह
माचा पर विश्राम हो और प्रति चरण अंत में १ गुरु हो उसको चौपैया
छंद कहते हैं ॥

उदाहरण

जय जय रघुनन्दा आनदकन्दा श्री मुख चन्द्र चकोरा ।
सेवक सुख कारी जग हितकारी परमारथ आनन्दा ॥
सरणागत आयो ताहि बचायो नारि अहिल्या तारी ।
असुरन को मास्यो सुर दुख टास्यो कीरति जग बिस्तारी ॥

१५ चौपाई छंद

जिसके चारों चरणों में सोलह २ माचा हैं उसको चौपाई छंद
कहते हैं ॥

उदाहरण

जब प्रभु गये जनक मखशाला सुखी भये सब निरख कृपाला ।
पाई निधि अमोल बहु भांती जिमि चातक हि मिले जल स्वाती ॥

१६ चौबोला छंद

जिसके पहिले और तीसरे चरण में सोलह २ माचा हैं और दूसरे
चौथे में चौदह २ हैं उसको चौबोला छंद कहते हैं ॥

उदाहरण

रघुपति नाम कहो मन मेरे और काम मत ध्यान धरो ।
निष्फल जन्म जात है तेरे सुनो बात को ठीक करो ॥

१७ षट्पद छंद

जिसके चारों चरणों में चौबीस २ माचा हैं और ग्यारह तेरह माचा
पर विश्राम होवे माचा छः आठ दस इस क्रम से हैं और अन्त में एक
उल्लास छंद हो और उस में पन्द्रह और तेरह पर विश्राम करे इस प्रकार

चार पद चौबीस २ माचा के और दो पद उल्लाहा के मिलकर छः पद हुए इसी हेतु इसका नाम षट्पद है ॥

उदाहरण

उज्ज्वल भूषण बसन जपति	शर चाप हस्त धर ।
सिंहासन आरूढ़ कंठगत	मुक्त माल वर ।
शेष सुरेश महेश चरण	पंकज बंदित नित ।
मन वांछित फल लहत कहत	जब रामहि धरि चित ॥
माथुर विनीत अनुनय करै	कुमति तिमिर सबके हरो ।
प्रभु भक्ति अनूपम सिद्धिदे	जगत जन्म पावन करो ॥

१८ भुल्लाना छंद

जिसके चारों चरणों में से तीस २ माचा हैं और प्रति चरण में दस २ माचा पर विश्राम हो और अंत में सात माचा हैं इस प्रकार जिसके चारों पद हैं उसको भुल्लाना छंद कहते हैं ॥

उदाहरण

पूजित राम पद ध्यान पद कमल दे	नाम ले जीभ से तारि देंगे ।
गीर्वाह सनाथ किय वेद महिमा कहै	दास निज जानि के पालि लेंगे ॥
देर मत करै सठ छाड़ि दे सकल हठ	मानि ले कही प्रभु साधि देंगे ।
भूठ है सकल जग नाहिं है याको बल	सुनि ले तू कान धर मान लेंगे ॥

१९ भूलना छंद

जिसके दोनो चरणों में छब्बीस २ माचा हैं और दोहो पद हैं उसको भूलना छंद कहते हैं परंतु तीन स्थान पर सात २ माचा पर और अंत में पांच माचा पर विश्राम हो ॥

उदाहरण

हर नाम जिय धर जानिकर	छल छन्द तजि जस होइ ।
यह बात है हित समझ ले	तन साफ़ कर मन धोइ ॥

२० त्रिभंगी छन्द

जिसके चारों चरणों में बत्तीस २ माचा हैं प्रत्येक चरण में दस आठ आठ छः २ माचा पर विश्राम हो और अन्त में एक जगण हो उसको त्रिभंगी छन्द कहते हैं ॥

उदाहरण

भज ले मन रामहि शोभा धामहि जग अभिरामहि तेज घनै ।
 जिन राकस मारे बली विदारे भक्त उबारे पालि घनै ॥
 शरणागत आयो ताहि बचायो जग जस छायो वेद भनै ।
 जो टेरै आरत पहुंचत भाजत कहु बहुतारत कोन गनै ॥

२१ दोहा छंद

जिसके चारों चरणों में अड़तालीस माचा हैं ऐसा तेईस प्रकार का दोहा छंद होता है तिन में भ्रमर नामक दोहा में बाईस गुरु अरु चार लघु होते हैं परंतु इसी में एक गुरु को घटा दो और दो लघु बढ़ाओ तो तेईस प्रकार के दोहा बन जायंगे अब जो दोहा बहुधा ग्रंथों में जिसके पहिले दो चरणों में तेरह ग्यारह और तीसरे चौथे में भी इसी रीति से माचा हैं ऐसा आता है उसी का उदाहरण लिखते हैं ॥

उदाहरण

श्रीरघुबीर सहाय ते जग सब भयो सनाथ ।
 दीनन को दुख दूर किय पाले अधम अनाथ ॥

२२ धत्ता छंद

जिसके आदि में दस फिर आठ फिर तेरह माचा पर विश्राम हो इसी प्रकार दोनों पाद हैं ऐसा दस माचा का धत्ता छंद होता है ॥

उदाहरण

बहु काज सुधारे पन परि पाले अपने ही परभाव बल ।
 झूठहु नहि बोले राम अमोले कबहु कीन्हो नाहि छल ॥

२३ गंधान छंद आर्या का भेद

जिसके पहिले और तीसरे पदों में सात और दस अर्थात् सत्तरह २ वर्ण हैं और दूसरे और चौथे पदों में आठ और दस अर्थात् अठारह २ वर्ण हैं और अन्त में दो गुरु हैं और प्रति चरण चौबीस २ माचा हैं उसको गंधान छंद कहते हैं ॥

उदाहरण

राम नाम गुण धाम सबै निश्चय करि जानो ।
 जाहि जपत शिव आप नेम करि वेद बखानो ॥

जोगी नित करि जोग पार नहिं पावत जानो ।
कवि जन का विधि कहैं बात यह मन में आनो ॥

२४ पट्टुड़िका छंद

जिसके प्रति चरण में चार चौकल अर्थात् सोलह २ माचा हों और
अन्त में जगण हो ऐसा चौंसठ माचा का पट्टुड़िका छंद होता है ॥

उदाहरण

हरि नाम लेहु जग जन्म पाइ तुम कान देउ मम वचन धाइ ।
नहिं है उपाय करु और भाइ निगमागम भाखत है सुगाइ ॥

२५ मधुमार छंद

जिसके प्रति चरण में आठ २ माचा हों और सगण जगण का नियम हो
उसको मधुमार छंद कहते हैं ॥

उदाहरण

प्रभू को उचार जग देह धार तन है असार दुख को अगर ॥

२६ पादाकुलक छंद

जिसके चारों पदों में सोलह २ माचा हों ऐसा चौंसठ माचा का पा-
दाकुलक छंद होता है ॥

उदाहरण

राम नाम नित सुधि कर लीजै और काम बिष सम तज दीजै ।
होय जन्म भर जग बिख्याता लहै मुक्ति जो मागत चाता ॥

२७ पद्मावती छंद

जिसके चारों पदों में आठ २ चौकल हों और अंत में एक दीर्घ हो
और दस आठ चौदह माचा पर प्रतिचरण बिश्राम हो उसको पद्मावती
छंद कहते हैं ॥

जय रघुकुल चन्दा आनदकन्दा मुनि जन मानस हंसहरी ।
धृत कौतुक वेशो कृत शुचि देशो पद दरसत जन बिपति ररी ॥
बानर दुखवारण जग सुख कारण मो बिनती को चित्त धरो ।
करुणा कर हेरो यह जन तेरो भक्त तत्व बर दान करो ॥

२८ वरवा छंद

जिसके पहिले और दूसरे पदों में बारह और सात २ माचा हैं ऐसा दो पद का वरवा छंद होता है ॥

उदाहरण

रघुवर चरण सरोरुह सेवहुभाई पाप समूह जु तेरे भागे धाई ॥

२९ रोला छंद

जिसके चारों चरणों में चौबीस २ माचा हैं और प्रति चरण में ग्यारह तेरह माचा पर विश्राम हो उसको रोला छंद कहते हैं ॥

उदाहरण

रघु कुल चंद आनंद कंद को महिमा भारी ।
चरण छुवाय अनंत नारि गौतम को तारी ॥
मुनि मख पूरण कोन्ह ताड़िकादुष्टविदारी ।
धनुष कियो द्वे टूक जगत कीरत विस्तारी ॥

जय रघुकुल चन्दा आनंद कन्दा मुनिमनमानस हंसहरी ।
धृतकौतिक वैशो कृतशुचि देशो पद दरसत जन बिपत टरी ॥
वारण दुख वारण जगसुखकारण मो बिनती को चित धरो ।
करुणा कर हेरो यह जन तेरो भक्ति तत्व वरदान करो ॥

उदाहरण

रघुवर नाम लेहु तुम चित करि और काम रिपु सम तजि दीजै ।
यह जग झूठ बेद यह भाखत दशरथ नंद चरण भजिलीजै ॥
जो कुछ मिले ताहि हित जानो बहुत लाभ कबहुं नहीं कोजै ।
परिहारि आस कुटुम्ब अपन की अनुपम भक्ति कथा रस पीजै ॥

३१ हरिगीत छंद

जिसके चारों चरणों में पांच चौकल फिर एकषठकल फिर एक गुरु हो इस प्रकार प्रति चरण में अट्ठाईस माचा हैं और नौ सात बारह माचा पर विश्राम हो ऐसा एक प्रकार का हरिगीत छंद होता है ॥

उदाहरण

भजि राम श्याम उदार सुंदर दीन पालक हैं बड़े ।
देवादि देखत दृष्टि जाको पादरज लोटत पड़े ॥

वेदो पुकारे नेति कहि के बितन द्वारे खड़े ।
सो करहु कारज सकल मेरे भक्ति भनि मानिक जड़े ॥

इर दूसरा प्रकार

प्रथम दो गुरु और एक लघु फिर षट्कला फिर तीन बेर पंचकला
इस प्रकार जिसके प्रति चरण में अट्ठाईस २ माचा हों ऐसे चार चरण करिके
युक्त द्वतीय छंद है ॥

उदाहरण

जो मानि है तू सीख मेरी सत्य मन में जानिके ।
तो होयगो सतकार जग में यही बात बिचार के ॥
जो देखि के फल आंख अपनी कूठदेहि त्याग के ।
लेराम नाम प्रभात उठके सकल काज बिसार के ॥

इतिमाचावृत्त

जहां गण आदि की संख्या से छंद की रचना हो उसको वरण छंद
कहते हैं और गणों का लक्षण पहिले लिख चुके हैं ॥

वर्ण छंदों में एक अक्षर के छंद से छब्बीस अक्षर तक पंडितों ने
संख्या कही है और छब्बीस अक्षर से आगे सत्ताईस अक्षर आदि के
छंदों की दण्डक संज्ञा है और ये तीन प्रकार के हैं सम अर्द्धसम विषम
भेद से तीन प्रकार के हैं ॥

इन छंदों के नाम और भेद नीचे के
चक्र से विदित होंगे

क्रम	भेदों की संख्या	नाम छंद	संख्या गुरु लघु की गण सहित	नाम भेद
१	१	उक्त्या	वा	ओ
२	४	अत्युक्त्या	गग ^१ लग ^२ लल ^३ गल ^४	काम ^१ मही ^२ मधु ^३ सार ^४
३	६	मध्या	म ^१ र ^२ य ^३ स ^४ त ^५ न ^६	तालो ^१ मृगी ^२ शशी ^३ रमण ^४ पंचाल ^५ कमल ^६
४	४	प्रतिष्ठा	मग ^१ रल ^२ जग ^३ नग ^४	तीर्ता ^१ धारी ^२ नगानिका ^३ सती ^४

५	४	सुप्रतिष्ठा	मगग ^१ तगग ^२ भगग ^३ नलल ^४	संमोहा ^१ हारित ^२ हंसी ^३ यमक ^४
६	८	गायत्री	सम ^१ सस ^२ जज ^३ तय ^४ नय ^५ तम ^६ रर ^७	शेषराच ^१ विधुरेखा ^२ डिल्ल ^३ मालती ^४ तनु- मध्या ^५ शशिवदना वसुमती ^६ विमोहा ^७
७	६	उष्णिक्	रयग ^१ नजल ^२ नसल ^३ भयग ^४ मसग ^५ ननग ^६	समानिका ^१ सुवास ^२ कर- हच ^३ शीर्षरूप ^४ मद- लेखा ^५ मधुमति ^६
८	८	अनुष्टुप्	भमगग ^१ जवलग ^२ रज गल ^३ ननगग ^४ नसलम ^५ जसलग ^६ मभठग ^७	विद्युन्माला ^१ प्रभातिका ^२ मल्लिका ^३ तुंगा ^४ कमल ^५ कुमारललिता ^६ चिच- पदा ^७
९	७	बृहती	र र र ^१ न य स ^२ म भ स ^३ न न स ^४ न स प ^५ स ज ज ^६ म म म ^७	महालक्ष्मी ^१ सारंगिक ^२ पाईता ^३ कमला ^४ विंव ^५ तोमर ^६ रूपमाली ^७
१०	५	पंक्ति	स ज ज ग ^१ भ म स ग ^२ भ भ भ ग ^३ व य भ ग ^४ न ज न ग ^५	संयुक्त ^१ चंपकमाला ^२ सा- रवती ^३ सुखमा ^४ अमृत- गति ^५
११	१०	त्रिष्टुप्	र न भ ग ग ^१ भ भ भ गग ^२ न ज ज ल ग ^३ न न न ल ग ^४ र ज र ल ग ^५ म म स ग ग ^६ त त ज ग ग ^७ र न भ ग ग ^८	सुपथ ^१ नीलसरूप ^२ दोध- क ^३ सुमुखो ^४ दमनक ^५ श्वेनिका ^६ मालती ^७ इंद्रवज्रा ^८ गंगाधर ^९
१२	६	जगती	य य य य ^१ स स स स ^२ र र र र ^३ त त त त ^४ ज ज ज ज ^५ भ भ भ भ ^६ न न न न ^७ (न भ भ र) ^८ स ज स स ^९	भुजंगप्रयात ^१ तोटक ^२ लक्ष्मोदर ^३ सारंग ^४ मोती- दाम ^५ मोदक ^६ तरलनय- नी ^७ सुन्दरी द्रुत ^८ विलं- बिल (प्रमिताचरा ^९)

१३	४	अति जगती	म त य स ग ^१ स स स स ग ^२ प प प प ल ^३ म म ज ज ल ^४	माया ^१ तारक ^२ कंदुक ^३ एकावली ^४
१४	३	शर्करी	त प स त ल ल ^१ (भ न- न न ल ग ^२) त भ ज ज ग ग ^३	मुखदायकचक्र ^१ चक्रवि- रति ^२ वसंततिलक ^३
१५	६	अति शर्करी	र ज र ज र ^१ भ ज स न स ^२ स ज ज भ र ^३ न न म प प ^४ न न न न स ^५ म म म म म ^६	चामर ^१ निशिपाल ^२ मन- हंस ^३ मालती ^४ शरभ ^५ सारंगिक ^६
१६	३	अष्टी	ज र ज र ज ग ^१ भ भ भ भ भ ग ^२ र ज र ज र ल ^३	नाराच ^१ नील ^२ चंचला ^३
१७	२	अत्पष्टी	ज स ज स प ल ग ^१ न स ज स प ल ग ^२	पृथ्वी ^१ मालाधर ^२
१८	२	धृति	य य य य य य ^१ र स ज ज भ र ^२	महा मोदकारी ^१ चर्चरी ^२
१९	२	अति धृति	म स ज स त त ग ^१ न न न ज न न ल ^२	शार्दूल विक्रीडित ^१ चन्द्रमाला ^२
२०	२	कृति	स ज ज भ र स ल ग ^१ र ज र ज र ज ग ल ^२	गीत ^१ दण्डिका ^२
२१	१	प्रकृति	म र म न य य य ^१	स्रग्धरा ^१
२२	३	आकृति	स म स न न न स ग ^१ भ भ भ भ भ भ भ ग ^२ म भ भ भ भ भ स ल ^३	हंसी ^१ मदिरा सवैया ^२ मोद सवैया ^३

२३	२	विकृति	भ भ भ भ भ भ भ भ गग ^१ ज ज ज ज ज ज ज ज लग ^२	मालती सवैया हन्द्र गजेंद्रगति ^१ सुमुखी सवैया ^२
२४	४	सत्कृति	ज ज ज ज ज ज ज ज ^१ स स स स स स स स ^२ र र र र र र र र ^३ भ भ भ भ भ भ भ भ ^४	बाम सवैया ^१ माधवी सवैया ^२ गंगाजल सवैया ^३ किरीट सवैया ^४
२५	१	अति कृति	सटग १	सुंदरी सवैया १
२६	१	उत्कृति	सटकल १	सुख सवैया १

छब्बीस अक्षरों से आगे दण्डक संज्ञा है उसके भेद बहुत हैं परंतु थोड़े से लिखे जाते हैं ॥

दण्डक

१	१	दण्ड	भ ४ त ३ भ २	सुधासार
२	१	तथा	ज र ज र ज र ज र ज ग	महीधर
३	१	तथा	स ६ लल	वसुधाधर

क्रम पूर्वक उक्त्या से प्रारंभ करके दण्डक पर्यन्त उदाहरण लिखते हैं ॥
एकाक्षर उक्त्या छंद, श्री, जो, है, सो॥ दो अक्षर का अत्युक्त्या छंदके भेद ॥

कामा.	देगा	सेवा	राधा	माधो
मही.	नटी	चढ़ी	करै	घड़ी
मधु.	हरि	भजि	सब	तजि
सार.	राम	नाम	सार	जान

तीन अक्षर के प्रस्तार के मध्या छंद के भेद

ताली.	जानेगा	राधा को	खावेगा	बाधा को
मृगी.	नामले	जीभ से	मानले	प्रीत से
शशी.	करोगे	भरोगे	सहेगे	पगोगे
रमण.	मनसे	तनसे	हरिसे	परसे

पंचाल. तूजान लेमान श्रीध्यान हेज्ञान ॥
कमल. कमल बदन धनद सधन ॥

चार अक्षर के प्रस्तार का प्रतिष्ठा वृत्ति छंद

तीर्नावाकन्या. जैश्रीराधा काटोबाधा होवेसाधा जो आराधा ॥
धारी. रामचंद काट फंद भूटद्वंद होअनंद ॥
नगानिका. हरी हरी हरे हरे घरी घरी रें रें ॥
सती. हरि भजे छल तजे जग छजे मनसजे ॥

पञ्च अक्षर प्रस्तार का सुप्रतिष्ठा वृत्ति छंद

संमोहा. श्रीसीतारामे सेवो खोकामे तोहोअरामे योआठोजामे ॥
हारित. श्रीरामभाई हांगेसहाई वेदोबडाई प्रत्यक्षगाई ॥
हंसी. जामनभावे सोनहि आवे रामहिगावे सोसुखपावे ॥
यमक. हलनखल हरणछल धरणहल करणबल ॥

६ अक्षर के प्रास्तर का गायत्री वृत्तिछंद ॥

शेषरात्र. गावो राधाकृष्णा वे हैं लक्ष्मी विष्णा ॥
विधुरेखा. मानो छाड़ो तृष्णा क्या हो भूँठे विष्णा ॥
डिल्ल वातिलक. हरिकोभजिये मनको सजिये तनको रजिये पनको तजिये ॥
मालती. गोविंद गुपाल भजो तत्काल कृपाल दयाल करेंसुनिहाल ॥
तनुमध्या. लेनाम अकेला है कामसुहेला होवेप्रभुचेला याहीजगमेला ॥
काशिवदना. परिहरिशोका करिमनरोका तन् ररि ओका करि यह थोका ॥
वशुमती. श्रीराम कहिये आनन्द लहिये गोपालभजिये सोकामतजिये ॥
विमोहा. राम को धरिले चित्तमें मानले कर्मको पालिले धर्मको जानिले ॥

सप्ताक्षर प्रस्तार का उष्णिक वृत्ति छंद

समानिका. रामरामकोगाओ लाभजन्मकापाओ औरकामकोछोओ
पापआपनेखोओ ॥

सुवास. रघुवरतूकहि सबफलयेालहि चलनभलोचहि जग-
दुखकोसहि ॥

करहच. प्रभुचरणसेउ सुखपरमलेउ धनद्विजनदेउ
यशपरमलेउ ॥

शीर्षरूपः राधाकृष्णागोपाला कंसा केशी है काला माधोविष्णालैमाला
गाओ यों सारे काला ॥

मदलेखाः भाखोनन्दकिशोरा राधाचंदचकोरा गोपीकेदधिचोरा
जैजैगालनछोरा ॥

मधुमतिः गहिप्रभुचरणा भवभयहरणा असरणसरणा सर्वसकरणा ॥

अष्टाक्षर प्रस्तार का अनुष्टुप् वृत्ति छंद

विद्युन्मालाः सीता माता धाओ भाई सारे कामा छोड़ो धाई
जाकी गाथा बेदों गाई मानों सारी शोभा पाई ॥

प्रभातिकाः अनाथकेअधारहैं महेशचित्तचारहैं प्रताप के
अगार हैं सुराम नाम सार हैं ॥

मल्लिकाः रामकृष्ण वासुदेव चित्त मार नित्य सेव कंस शत्रु देव
देव विश्वमित्र हे सुमेव ॥

तुंगाः हरिचरण सुहाये विपद हरण गाये जन मन अति भाये
हरिखि हरण धाये ॥

कमलः नर हर पद मानो सुखद सुभग जानो भनत सुकविठानो
विशद समझ गानो ॥

रकमलः रघुवर कथा कहो मन मह यथा लहो जनम भरि तथा
चहो करम को वृथा बहो ॥

कुमारललिताः भजो जु वृज चन्द को तजो जु दुख द्वंद को सजो जु
सुख कंद को मजो जु तन फंद को ॥

चित्रपदाः श्रीरघुवीर पुकारो औ मन में यह धारो जो जग को
रखवारो है तन को वह कारो ॥

नौ अक्षर के प्रस्तार का वृहती वृत्ति छंद

महालक्ष्मीः राम के नाम को गाइये भाग के योग से पाइये बेद के
हेतु से चाहिये बुद्धि के भेद से पाइये ॥

सारंगिकः नरहरि माधो चाहिये सब दुख दूरो रहिये तन सुख
पूरो लहिये नहि करु काहू कहिये ॥

पाईताः गाओ साधो रघुवर को धाओ भाषो गिरधर को लाओ
गंगा वरजल को पाओ भागे शुभ फल को ॥

कमला. हरि हर कहि मन सो सब सुखलहि तन सो भव दुख
नहि छल सो बचन समझि पन सो ॥

बिंव. मधु बिपन केलि कारी वृज युवति चित्त हारी अनघ जन
गेह कारी बसहु मन में मुरारी ॥

तोमर. नव कंज लोचन स्याम भव फंद मोचन राम तेहि सेइ
चित्त लगाइ तब पाइ है कछु भाइ ॥

रूपमाली. श्रीराधाकृष्ण है गोविंदा माधो विष्णा जो है आनन्दा
ताको ध्याओ छोड़ो सो फन्दा ऐसे भाखे स्यानेओ छंदा ॥

दशअक्षर के प्रस्तार का पंक्ति वृत्ति छंद

संयुक्त. भजरामकृष्ण कृपाल को लखि दीन बंधु दयाल को तर.
जाइ गो यह मान ले सुख पाइ के जिय जान ले ॥

चंपकमाला. कालिय हास्यो खेलत माथे मुष्टिक मास्यो भेटत साथे
कंस पक्षास्यो भाखत गाथे है सब को श्रीमोहन नाथे ॥

सारवती. मोहन रूप मनावत हैं चार पदारथ पावत हैं नाम
उपाइ बनेसु जभो श्रीपति होय सहाइ तभो ॥

सुखमा. सीता रमना सेवा चरना मोता सरना भेवो हरना
ऐसे प्रभु को जासे कहिये जंचे पद को नीके लहिये ॥

अमृतगति. रघुवर राम सुकहिये गुरुपद सेवत रहिये जगत जन्म
फल पइये सुरसर तीर जु रहिये ॥

ग्यारह अक्षर के प्रस्तार का त्रिष्टुप् वृत्ति छंद

सुपथ. रामनाम सुखधाम पिछानो काम काम दुखसाधन जानो
बार बार कह बेद पुरानो ध्यान धारि अपने चित मानो ॥

नीलस्वरूप. राजिव लोचन मोचन हेंगे एक चित्त मनोरथ यहै करेंगे
दोधक ताहि भजो प्रभु हाथ धरेंगे नाम कहे सब काम सरेंगे ॥

सुमुखी. छल बल छाड़ि सुराम गहो जिय भल जानि निचिंत रहो
पल भर एक न और कहो सुख मन मांहि अनन्त लहो ॥

दमनक. छिन भर भजन करहुगे अति भल सुजस लहहुगे जब
हरि पदहु धरहुगे कबहुन जनम परहुगे ॥

श्येनिका. राम नाम नेम बांधि गाइये ब्रह्म लोक शोक मोक पाइये
और नहि है उपाइ जानिये चित्तमाहि प्रेमसाजि मानिये ॥

मालती. रामाकृष्णा माधो केशी को हंता सेवा साधो ताको भाखै सो
संता जाकी माया सोहे योगी एकंता सोहै लाला बाला गोती श्रीकंता ॥

इन्द्रवज्रा. गोविन्द गोपाल मुकंदनाथा श्रीराम श्रीकृष्ण मुरारि नाथा
गाऊ सदा जोरि दयाल हाथा धोऊ सबै पाप जुनाइ माथा ॥

द्रुतप. भजो जपो राम सुपालि लेंगे करो सदा ध्यान निवाह लेंगे
परो मती फंद कृपा करेंगे धरो मनोधीर कभी सुनेंगे ॥

गंगाधर. कृष्ण कृष्ण तुम येही भजोऊ पाप पुंज सब बेग हरोऊ
दास जानि मनधीर धरोऊ चास आस जग दूरि करोऊ ॥

द्वादश अक्षर के प्रस्तार का जगती वृत्ति छंद

भुजङ्गप्रयात. सदाशम्भु जाकी करै नित्य सेवा वही है परब्रह्म
श्रीराम देवा बड़े प्रात ही जो भजै तासु नामा यहां होय ताके सदा
सिद्ध कामा ॥

तोटक. भजि रामहि सीतहि सीख सुनो तजि कामहि मीतन और गुनो
तप औ जप योग बने न तभी बल हीन जु होय शरीर जभी ॥

लक्ष्मीधर. आठहु जाम में राम को नाम है त्यागि धंधा सबै प्रेम सो
काम है वेद साखी भरे आपहु देखिले देह है भूठ पाके रंग को पेखिले ॥

सारंग. श्रीराम गोविन्दगोपाल को गाय संसार संताप संतान त्यों जाय
तू चित्त में सोच है बात त्यों ठीक या मान को त्यागि के मानले नीक ॥

मोतीदाम. गुपाल दयाल भजो तन पाइ कभू नहिं और बिषे मन जाइ
यहे मत मानि कहेो नित धाइ तजौ चित्त मान वृथा वय जाइ ॥

मोदक. केशिय मारनकंस बिदारण बंशी धारण गोप बितारण केशव
मोहन माधव के गुन मोह सबै तजि तू चित्त से सुन ॥

तरलनयनी. बिघन हरण भगत सरण शरण सुखद जलद बरण
जगत बिपिन बिपति हरण कमल नयन भजहु चरण ॥

सुन्दरी छन्द. इसी को द्रुत विलम्बित कहते है

जैसै. सुजन पालन राम दया धरो दुखद पालक पुंज सबै हरो
बनतु नाहि कछू तप देह सो करहुगे पन पुरन नेह सो ॥

प्रमिताक्षरा. हरि नाम लेउ जग है सपना यह मान लेउ तजि के लपना सब झूठ खानि नहि है अपना सुत नारि बंधु दुख के धपना ॥

त्रयोदश अक्षर के प्रस्तार का अतिजगती वृत्ति छंद

माया. राधा कृष्णारे मन गाओनित जी से आठों जामा और न कामा हित पीसे साधो संता वेद पढ़ता तहि बीते कामा क्रोधा लोभ सुफन्दा जिन जीते ॥

तारक. प्रभु बेगि हरो सब पाप हमारे अधमाधम नाथ कितेकन तारे अब और कछु नहिं साधन है जू तुम आपन जानि निबाह करो जू ॥

कंदुक. करोगे सहाई सदा राम भूपाल तजो मोह के फन्द औ सर्व जंजाल भगे हैं तभी छाड़ के धाम एकंत पुकारे याजभी आह के नाग श्रीकंत ॥

एकावली. मोहनभजहु मुरारि मनोहर दानव दलन दयाल दमोदर जानत सकल कृपाल सदा गति राजिव नयन उदार रमापति ॥

चौदह अक्षर के प्रस्तार का शरकरी वृत्ति छंद

सुखदायक. सीता पति आराधहु मानो सीख सब बाधा सबही बांधहि जानो नीक अब ओ रोज नहु भाखत आये मोत जब देख्यौ प्रभु है रत्न-क आई भीत तब ॥

चक्रधर. हे प्रभु रघुबर कमल नयन हो तारन तरन सुखद मुनि जनहो पालन करहु बनत नहि भजना आसजु करहु भगत दुख हरना ॥

वसंततिलक. भाखो रमापति तजो सब काम भाई धारो सदा यम भजो हरि काल जाई मानो यहै पन सजो गुरु बात पाई भागो नहीं दृढ़ करो नहिं काल खाई ॥

पन्द्रह अक्षर के प्रस्तार का अतिशरकरी वृत्ति छंद

चामर. राम नाम आठ जाम चित्त लाइ गाइये धाम काम पाय वास मित छाड़ि धाइये कोटि जन्म मध्य योग कर्म आस पाइये नन्दलाल कंस काल होत जो सहाइये ॥

निशिपासिका. राधि कहि साधि पुनिमाधवहि मानिले जाइ भय संतति बिचार जिय जान ले भाखि मुनि नाथ यह बात सुखदा सदा देखि निज लोचनन कृष्ण पद की अदा ॥

मनहंस. अह मेव खंडन नन्द नन्दन ध्याइये दिन रेन माधव पद
पद्म मनाइये सब और फंदन छोड़ राघव गाइये यह पुण्य के बंश योग
भागन पाइये ॥

मालती. रघुवर धनुधारी ताड़का प्राण हारी बर बिपन बिहारी
लोक आनन्द कारी अनु नय अब मेरो कान दे के सुनो जू अगणित
अघ मेरे नाथ बेगे हरो जू ॥

शरभ. कमल नयन घन तन बर वयना त्रिभुवन तिलक सुखद
अहि शयना विनय सुनहु समझहु मन अपना हरहु सकल दुख जन-
तन खपनो ॥

सारंगिक. श्रीमाधो बिष्णु राधाकृष्णा गोविन्दा गोपाला कान्दि
कूला नाचे लीला केशी कंसा काला गोपी को मोहीं भाखे योंही केशो
कान्हा कैया में हूंगी तेरी देखो हेरी राखो मोहि कन्हैया ॥

भ्रमरावली. रघुनाथ अनार्यानि के प्रति पालक हैं दनुजाधिप संतति
के नित घालक हैं ताज के छल केवल को तुम ताहि भजो जग चारि
पदारथ के फल को बिलसो ॥

सोलह अक्षर के प्रस्तार का अष्टौ वृत्ति छंद

नाराच. भजो रमेश राम को महेश सिद्ध काम को सुरेश पूज्य
पाद को दिनेश तेज धाम को तरे सदाजु दीन हीन नाम के प्रभाव से
करे सहाइ दास की बचाइ दे सुनाप से ॥

नील. पालतपो मन आप सदा जन राम बली दानव दुष्ट विना-
शन है यपि देव यली कारन तारन जानि सके कहु कोन छली सिद्ध
समाजन की अजहूं मति जाति चली ॥

चंचला. राम राम देव देव सिद्धि देहु मोहि आज दीन जानि दीन
बंधु नाथ तोहि दास लाज बानि है कृपाल आप दोरि दोरि कोन्ह काज
साखि है दयाल वेद औ पुरान भक्त भाज ॥

सत्रह अक्षर के प्रस्तार की अत्यष्टौ वृत्ति छंद

पृथ्वीधर. रमेश रघुनाथ को सुमिरि चित देके अभी महेश अहि
नारदादि कर जोरि पावें तभी सुरेश महिमा अपार मन बाधि धावे
सभी कहों किमि जु वेद आप गुन गाइ गावें कभी ॥

मालाधर. करन गुन गान जासु मुनि तेज साजे सदा सुमिरि हरि
राधिका मुक्ति नोक पैहो तदा भनत इमि वेद नेति तनु है सु
जाको यदा मनुज यह बावरो ग्रहि सके सु ताको कदा ॥

शिखरणी. पुकास्यो है ज्योंही विपति वश है के ग्रह जभी सुनी
हैगी त्योंही दुखित जन की आरति तभी बिसारी है लक्ष्मी अरध
मगछाड्यो गरुड को सदा कोनी रत्ता निज बचन पाल्यो परण को ॥

अठागह अक्षर के प्रस्तार का धृति वृत्ति छंद

महा मोद कागी. हरे राम देवेश हेकृष्ण साधो मुकंटा मुरारी दया-
सिंधु दाभोटरा कंस केशी बिदास्यो कुचारी करोगे सदा दास को जानि
के प्रेम कामा उचारो करीही कृपा लाज को मानि के द्रौपदी ज्यों पुकारी ॥

चर्चगी. राम को भजि है भली यह रीति जानि सुजीय सो काल है
कलिकाल या मह नेम राखि जुहीय सो और काम न है सकै कछु प्रेम
धारहु पीय सो पालि हैं यह जान ले मन छूटि हैं जग छोय सो ॥

उन्नीस अक्षर के प्रस्तार का अतिधृति वृत्ति छंद

शार्दूल विक्रीडित- दुग्धां भो निधि धारसी शरकरी जो जोन्ह बिस्तार
सी गौरी कांत पहार सो जग मगे जो मुक्ति आहार सी ऐसी किर्ति
अपार राम नृपते मानो सुधा धारसी सोहे मालति मल्लिका कुसुम की
जो दोघ संहारसी ॥

चन्द्रमाला. रघुवर नर हरि भजिये तजि सब घर पुर चान सरन
गहि रहिये तिहि छवि राखि उर जगत जनित भय मिटि हैं यह
समझ हुलसि जनम करम सब सरि है करहु भगति सखि ॥

बीस अक्षर के प्रस्तार का कृति वृत्ति छंद

गीत. भज राम चन्द दिनेश दानव दुष्ट बंश निकन्दनम् अवधेश
आनन्द कन्द श्री भगवानभव भय भंजनम् जिहि आदि देव महेश
सेवत नारदादिक धावहीं तनधारि जाग समाधि जाकर पार को
नहिं प वाहु ॥

चण्डिका. राम नाम नित्य गाइ पाप पुंज दोष कुंज खाइ जात धाम
भोग साज लाभ लाज मोह राज धोइ जात मान आज सीख नोक
लागे और तोहि फीक मान रोड़ि वेद भाखि राखि साखि गांठ बांधि
पाठ साधि सांधि जोड़ि ॥

इक्कीस अक्षर के प्रस्तार का प्रकृति वृत्ति छंद

स्रग्धरा भज राम चन्द्र दिनेश दानव दुष्ट वृन्द निकन्दनम् अव-
धेश आनन्दकन्द कौशल चन्द्र दसरथ नन्दनम् जिहि आदि देव
महेश सेवत नारदादिक धावहीं मन धारि योग समाधि जाकर पार
कबहु न पावहीं ॥

बाईस अक्षर के प्रस्तार का आकृति वृत्ति छंद बाईस अक्षर
से छब्बीस अक्षर तक सबैया गिना जाता है

हंसी मारे केशी कंसा दाने कमल नयन विधु वदन विभु साई ऐसे
पृथ्वी बाधा टारी गिरवर धरन जगत मह आई औरो साधा संता थापे
चरित कहत कछु वरनिन जाई सेवो राधा कृष्णा पादा विपति परति
बत करत सहाई ॥

मदिरा सबैया आवत मोहन गाइ चरावत् गोपिन के मन भावत है
गो रज छाई रही तन में कर फूल उछालत आवत है या छबि को
कहु कोन कहै निगमागम मर्म न पावत है भाग बड़े वृज वासिन के
तिहि आपन साथ खिलावत है ॥

मोद सबैया सेवत जाहि सदा सनकादिक नारदहू गावे करि गाने
धावत है लहि योग समाधि न पावत योगी हू धरि माने जाचत
ताहि कहो किमि मानुष लोभ भस्यो व मारे अभिमाने जो पत दास
निवाहक जानि करै सु दया जानो परि माने ॥

तेईस अक्षर के प्रस्तार का विकृति वृत्ति छंद

मालती सबैया याही को मतंग पद और यविचा और इंदु भी कहते हैं ॥

सांझ समे घर आवत मोहन दोरति माइ जु लेति बलैया गायन
साथ लसै पट पीत धरै लकुटी कर ताल बजैया औ गल माल दिये
तन भूषन मंद हसे कबहुं किलकैया मोरन के चहुंचन्द लसे बिच फूलन
है गहने सुख दैया ॥

सुमुखी सबैया गहो पद राम सुथान लहो मन में यह बात जपो
सुख से उठो अति भोर तजो अलसे करि पूजन यों भजि हीं दुख से
करो नित याद जु पाठ पढ़ो पर पूरन ग्रंथ करो मुख से धरो मन धीर
नखेल लगे गुरु के समु के जु रहो सुख से ॥

चौबीस अक्षर के प्रस्तार का सत्कृति वृत्ति छंद

बाम सवैया. परी जब घोर पुकार भले दिवि देवन रावण आनि सतायो
करे अगु आ सुर जेठ तपै गहि सागर छोर सुजाय जमायो भई गग ना
मह आइ अकाज करो मति चाच सवै सुनि पायो धरो जग रूप जु मा-
नुष को घर में अवधेश रहें जस छाये ॥

माधवी सवैया. सगुनो सब भांति भरा तबहीं जबहीं मुनि संग लिवाय
चले युवती मुनि गौतम को जु करै अघ ओघ सबै बिनसाय चले सब
राज समाज तजी अपनी मन आस निरास परायचले रघुनन्द वला
गवने घर से तन रावन शंक बढ़ाय चले ॥

गंगा जल सवैया. भाखिये राम के नाम को आठहू जाम में वेद को
देखि के गान है याचना चासना आनि कोई करै आप से तासु को राखि-
ये मान है सीख को मानि के बैठि के सोचलो नाहि या रोग की औषधी
आन है जातु है जन्म योंही वृथा पुण्य वेली लसे गंगा पानी करो पान है ॥

किरीट सवैया. जात जभी यमुना तट पै मटकी लकुटी करि होत
उतारन लाल भयो जसुधा घर माइ सुवा यह को कुल गोत उचारन
मानत नाहि सुकौन कहै पकरै गहि बाह हंसे जग जारन मोहन नाक
सुनाय नचे किलके करि गान फिरे मग चारन ॥

पच्चीस अक्षर के प्रस्तार का अति कृति वृत्ति छंद

सुन्दरी सवैया. दधि बेचन को तुम आवतुहो कर होत इहां मग जो
इहि आवे बचि कोन सके जिन सो तुम पूछहु कोजन चारन कोन बतावे
भगरो न करो अगरो नहि मांगत देहु वही जु हमे मन भावे नहि मानहुगे
कहिबो तुम लाल छिने मुरली अरु नाच नचावे ॥

छब्बीस अक्षर के प्रस्तार का उत्कृति वृत्ति छंद

सुखद सवैया. रघुनाथ अनायन के प्रति पालक घालक दानवहै मन
में गिन बन जाइ मुनीश सनाथ किये दुख दूरि भये खल भागि रहो छिन
सुगरीव सखाहित वालि हन्यो हनुमान किये वर दूत तभी तिन प्रभु
को महीमा कहु कोन कहै सरनागत सारथ रूप घस्यो जिन ॥

सत्ताईस अक्षर के प्रस्तार का

वसुधाधर दण्डक

आज करी तुम फेर लला मग रोके दही को जु चली हम बेचन को
हमसां कर लेत रहे कहु तूही नयो भयो लिवैया बड़ा जस सोचन जो मन
लोभ भयो दधि के हित तो यों कहां देहु योहीं न भिख खेचन नन्द
जसोमति जो सुनि हैं बचि तो तू रहेगो कहा जो करे पेचन ॥

अट्ठाईस अक्षर का महोधर दण्डक

महेश आदि देव जाहि योग धारि सेवहीं अनादि रूप वेद लेखहीं
करें सुगान नारदादि जासु निति रीति को न खोज को लहैं सुहेतु पेखहीं
जु आपनी कृपा करै बिहीन दीन जानि कै कृमा करै निहार और देखहीं
कहै मनुष्य कोन भांति मान मोहसां भरगे वसे परयो परी जु कर्म रेखहीं

उन्तीस अक्षर का वसुधार दण्डक

जब टेर करी सब देवन ने पय सागर जाय अनन्द रूप लख्यो उन
ग्रह है बिनती पति लोकन के वृजराज सबै अब काज दिये दुख को
सुन असुरो अब बाढ़ि गये भुअ लोक करै नित हानि चले अपने मग को
पुन सु बराबर कोन करे उनको नहि है कछु जोर धरे इक आस हि
तो गुन ॥

ये उदाहरण एक अक्षर से ले कब्बोस अक्षर तक समवृत्त के हैं ॥

अर्द्ध समका उदाहरण द्वादशमध्या छंदः

मानहि जो गुरु बात बिचारी वह अति होइ सुखी तनुधारी । पावहि
ज्ञान लखे मनमारी । मुदित निबाहत ताहि मुरारी ॥

विषम वृत्त का उदाहरण- सौरभ छंद हरि राधिका पदरहु पाइ ॥ प्रभु
सदन ज्ञानचेतना पालनाकरत नाथविभो ॥ शिव आदि जासु गुनटेरि गावहि ॥

शब्द समुद्र अगाध कोऊ जन याह न लायो ॥ में अति ही मतिहीन
कछु ग्रंथन बल गायो ॥ लघुदीर्घ बिनु बिंदु बिंदु युत ज्ञान न राखों ॥
नहि कछु अनुभव अरथ सकल हट ताकरि भाखों ॥ अक्षर माया के बुरे
इसको दोष न देखिये ॥ क्रम भंग होइ या ग्रंथ में सो बिचार उर लेखिये ॥

इति सप्तम अध्याय